प्रस्तावना

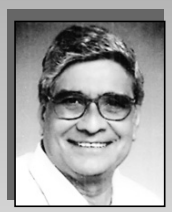

ललित सुरजन

आज मैं आपकी मुलाकात सुरेन्द्र प्रसाद जी से करवाना चाहता हूं। श्री प्रसाद जमशेदपुर में रहते हैं। टाटा स्टील के वित्त विभाग में उच्च अधिकारी थे। सेवा से अवकाश लिए काफी अरसा गुजर चुका है। होम्योपैथी के जानकार हैं। जमशेदपुर के होम्योपैथी कॉलेज में अध्यापन कर चुके हैं इसलिए नाम के आगे डॉक्टर उपाधि भी जुड़ी हुई है। वनस्पतिशास्त्र में दिलचस्पी रखते हैं, पेड़-पौधों का अच्छा ज्ञान है, डाक टिकट संग्रह में गहरी रुचि है। इतना परिचय पा लेने के बाद यह भी जान लीजिए कि श्री प्रसाद इस 14 सितंबर को ब्यानवे साल की आयु पूरी कर तिरानबे साल की दहलीज पर दस्तक दे रहे हैं। इस रोचक संयोग पर ध्यान दीजिए कि उनकी जन्म तारीख 14 सितंबर है। ऐसा कौन सा हिन्दी प्रेमी होगा जिसे यह तारीख याद न रहे! सितंबर की यह तिथि जो कभी एक दिन के राजभाषा दिवस या हिन्दी दिवस के रूप में मनाई जाती थी, उसने अपने अधिकार का विस्तार एक तारीख से 30 तारीख तक पूरे महीने तक कर लिया है।

मैं श्री प्रसाद का उल्लेख सिर्फ उनकी जन्मतिथि के लिए नहीं कर रहा हूं बल्कि इसलिए कि वे एक विचारशील हिन्दीसेवी हैं जिन्होंने बढ़ती आयु के बावजूद अपनी सक्रियता बनाए रखी है। इसका प्रमाण है कि उन्होंने अब तक अपनी छह पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इनमें एक उपन्यास है, दो लघुकथा संग्रह और तीन कहानी संकलन। ये सारी पुस्तकें उन्होंने सेवानिवृत्ति के बाद लिखी हैं और इनमें उनके जीवन के अनुभवों की छाप स्पष्टतः देखी जा सकती है। जॉगर्स पार्क की कहानियां नामक पुस्तक की भूमिका में वे अपने बारे में लिखते हैं कि-

मैं वृद्धावस्था के अवकाश का सदुपयोग करने के लिए लेख और कहानियां लिखने लगा जो कई समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगे। उस समय मुझे एक कहावत याद आयग- 'चलता आदमी और दौड़ता घोड़ा कभी बूढ़ा नहीं होता।' बस फिर क्या था मैंने ठान लिया कि अंत समय तक लिखने का काम करता रहूंगा।

लेखक का विचार सराहनीय है और अनुकरणीय भी कि वह वृद्धावस्था को अपने ऊपर हावी न होने देकर जीवन की संध्या को रचनात्मकता के एक नए रास्ते पर ले जाने का साहस कर सका है। मैं कहना चाहूंगा कि हिन्दी को श्री प्रसाद जैसे सच्चे प्रेमियों की आवश्यकता है जो बिना लाभ-लोभ के भाषा की उन्नति में योगदान करने के लिए तत्पर रहते हैं। श्री प्रसाद की भावना उन्हें स्वघोषित हिन्दीप्रेमियों के एक बहुत बड़े समुच्चय से अलग कर अलग धरातल पर स्थापित कर देती है। श्री प्रसाद से मेरा परिचय लगभग पन्द्रह वर्ष पूर्व हुआ जब वे अपनी रायपुर निवासी बेटी श्रीमती सुनीता गुप्ता के घर आए थे और फिर नाती राकेश को लेकर मुझसे मिलने के लिए पधारे थे। उन्होंने तब डाक टिकटों के बारे में कुछ लेख लिखे थे। वे लेख मैंने देखे, रोचक प्रतीत हुए, मुझे लगा कि देशबन्धु के पाठक इन लेखों को पसंद करेंगे। वहां से एक सिलसिला शुरू हुआ। डाक टिकटों के बाद पेड़-पौधों पर भी उन्होंने छोटे-छोटे लेख लिखे जिनका देशबन्धु में धारावाहिक प्रकाशन हुआ।

अभी कुछ दिन पूर्व सुनीता जी मेरे दफ्तर आईं और अपने पिता द्वारा लिखी छह पुस्तकों का सेट मुझे प्रदान किया। उस दिन से मेरे मन में विचार उठ रहा था कि प्रसाद जी और उनके रचना कर्म से पाठकों को परिचित कराऊं। वे स्वयं अपनी रचनाओं के बारे में क्या कहते हैं इसे लघुकथा संग्रह अजनबी की भूमिका से उनके ही शब्दों में जानिए-

पुराने जमाने की तुलना में आज लगभग सभी लोग बहुत अधिक और अनेक प्रकार की समस्याओं से जूझ रहे हैं। मैंने अपनी लघुकथाओं में इन समस्याओं को उजागर कर, उनका समाधान ढूंढने में पाठकों की सहायता करने की चेष्टा की है। उन्हें कुछ भी लाभ हुआ तो अपना प्रयास सार्थक समझूंगा।

यह बात तो उन्होंने कथावस्तु के बारे में की है, भाषा शैली के बारे में उनके विचार क्या हैं यह इसी प्रस्तावना की निम्नलिखित पंक्तियों से जानिए-

आज के युग में आज के लोगों के बीच रहता हूं और उनके लिए ही लिखता हूं।

मैं श्री प्रसाद का उल्लेख सिर्फ उनकी जन्मतिथि के लिए नहीं कर रहा हूं बल्कि इसलिए कि वे एक विचारशील हिन्दीसेवी हैं जिन्होंने बढ़ती आयु के बावजूद अपनी सक्रियता बनाए रखी है। इसका प्रमाण है कि उन्होंने अब तक अपनी छह पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इनमें एक उपन्यास है, दो लघुकथा संग्रह और तीन कहानी संकलन। ये सारी पुस्तकें उन्होंने सेवानिवृत्ति के बाद लिखी हैं और इनमें उनके जीवन के अनुभवों की छाप स्पष्टत: देखी जा सकती है।